Krishna singh, 2nd sem programme

तुलसीदास

तुलसीदास गोस्वामी तुलसीदास नाम से भी जाने जाते है । वे हिन्दू कवि और संत तथा रामानंदाचार्य कुल के रामानंदी सम्प्रदाय के दर्शनशास्त्री और भगवान श्री राम के भक्त थे । तुलसीदास अपने दोहों और कविताओं के लिए विख्यात है । उनके द्वारा लिखित महाकाव्य रामचरितमानस के लिए वे सबसे ज्यादा लोकप्रिय हुए । इनके पिता का नाम आत्माराम दुबे तथा माता का नाम हुलसी देवी था । पत्नी का नाम रत्नावली और गुरु का नाम संत नरहरिदास था । तुलसीदास द्वारा रचित 12 रचनायें काफी लोकप्रिय है , जिनमें से 6 उनकी मुख्य रचनायें है और 6 छोटी रचनायें है । अवधी में लिखी गई उनकी रचनायें है - रामचरितमानस , बरवई रामायण , जानकी मंगल , पार्वती मंगल , रामलाल नहछू और रामाज्ञा पत्रिका । ब्रज में लिखी उनकी रचनायें है - विनय पत्रिका , गीतावली , कृष्ण गीतावली , साहित्य रत्न , दोहावली , वैराग्य संदीपनी ।

इन सभी के अलावा तुलसीदास द्वारा रचित कुछ रचनाएँ ऐसी भी है जो काफी प्रसिद्ध है जैसे तुलसी सतसई , हनुमान चालीसा , हनुमान अष्टक , हनुमान बहुक । इनकी मृत्यु संवत 1623 श्रावण शुक्ल सप्तमी के दिन हुआ ।

विद्वानों का मानना है कि तुलसीदास के माता-पिता ने बाल्यकाल में ही इनका त्याग कर दिया तथा इनका पालन-पोषण सन्त बाबा नरहरिदास के संरक्षण में हुआ । इन्ही के देख-रेख में तुलसीदास ने भक्ति एवं ज्ञान की विद्या अर्जित की और शिक्षा पूरी होने के उपरांत ये पुनः अपने ग्राम राजपुर आ गए । जहाँ पर इनका विवाह पंडित दीनबंधु पाठक की सुकन्या रत्नावली से हुआ । तुलसीदास अपनी पत्नी से बहुत अधिक प्यार करते थे , जिससे एकबार रत्नावली तुलसीदास से गुस्से में होकर बोली कि जितना ज्यादा प्यार मुझसे करते हो इससे कम ही थोड़ा प्रभु भक्ति में लगाते तो शायद प्रभु आपको साक्षात दर्शन देते । पत्नी की ये बात सुनकर तुलसीदास के दिल में गहरी चोट लगी और इसके बाद वे पूरी तरह से प्रभु की भक्ति में लग गए । इसके उपरांत काशी के विद्वान शेष सनातन से तुलसी ने वेद-वेदांग का ज्ञान प्राप्त किया और अनेक तीर्थो का भ्रमण करते हुए श्रीराम के पावन चरित्र का गुणवान करने लगे । तुलसीदास का सर्वाधिक समय काशी , अयोध्या और चित्रकूट में व्यतीत हुआ । किंतु अपने अंतिम समय में वे काशी आ गए और सन 1623 को इन्होंने राम-राम कहते हुए काशी के अस्सी घाट पर परमात्मा में विलीन हो गये ।